मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवस्था विद्यार्थियों केस्वास्थ्य एवं समायोजनके प्रभाव का अध्ययन

देवेन्द्र कुमार[1] प्रो सुनील कुमार जोशी[2]

[1]शोध कर्ता, एम जे पी रोहिलखंड विश्वविद्यालय बरेली
[2]शोध निर्देशक, प्राध्यापक, वर्धमान कॉलेज विजनोर

सारांश

शारीरिक स्वास्थ्य का अर्थ शब्द से स्पष्ट हो जाता है कि निरोग व्यक्ति शरीर से स्वस्प है। मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ इतना आसान नही है क्योंकि शारीरिक रोग पता चल जाते है, जो रोगी है उसे स्वयं पता चल जाता है पर मानसिक रोग मानसिक अस्थिरता का पता उतनी आसानी से नही चलता। चल भी जाये, तो व्यक्ति उसे प्रकट करने में संकोच करता है, क्योंकि सामान्य बोलचाल की भाषा में मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति को पागल ही कहा जाता है। मानसिक स्वास्थ्य कार्य की ऐसी आदतो तथा व्यक्तियों और वस्तुओं के प्रति ऐसे दृष्टिकोण को व्यक्त करता है जिनसे व्यक्ति को अधिकतम सन्तोष और आनन्द प्राप्त होता है। किन्तु व्यक्ति को यह संतोष तथा आनन्द उस समूह या समाज सें, जिसका वह सदस्य होता है. तनिक भी विरोध किये बिना प्राप्त करना पड़ता है।

मूलशब्दः माध्यमिक विद्यालय, किशोरावस्था, शैक्षिक निस्पत्ति, स्वास्थ्य

प्रस्तावना

शिक्षा बालक के हृदय में देश प्रेम बलिदान व निहित स्वार्थों की त्याग की भावना को जाग्रत करती है. शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक भूमिका अदा करती है। निश्चय ही शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जोमानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा को दो ध्रुवीय प्रक्रिया कहा जाता है. जिसमें शिक्षक सिखाता है और विद्यार्थी सीखता है। शिक्षक निर्देशन करता है तो छात्र उसको गृहण करता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक तथा छात्र दोनों के बीच परस्पर आदान–प्रदान होता है। शिक्षक अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के विभिन्न अंगों के प्रभाव से छात्र के व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार करता है। जिससे वह सम्यक विकास की ओर अग्रसर होता है। छात्र को विद्यार्थी, शिक्षार्थी और शिष्य आदि नामों से जाना जाता है। दो पक्षों के अतिरिक्त एक पक्ष और होता है, जिसको पाठ्यक्रम कहा जाता है। इन तीनों पक्षों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कोई भी शिक्षा की प्रक्रिया प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षक के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है। शिक्षा को दो धुव्रीय प्रक्रिया कहा जाता है जिसमें शिक्षक सिखाता है और विद्यार्थी सीखता है। शिक्षक निर्देशन करता है तो छात्र उसको गृहण करता है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक तथा छात्र दोनों के बीच परस्पर आदान–प्रदान होता है। शिक्षक अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के विभिन्न अंगों के प्रभाव से छात्र के व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार करता है। जिससे वह सम्यक विकास की ओर अग्रसर होता है। छात्र को विद्यार्थी, शिक्षार्थी और शिष्य आदि नामों से जाना जाता है।

दो पक्षों के अतिरिक्त एक पक्ष और होता है, जिसको पाठ्यक्रम कहा जाता है। इन तीनों पक्षों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कोई भी शिक्षा की प्रक्रिया प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षक के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक धर्म, राज्य समुदाय, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसमें राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक तत्व एवं अनिवार्य घटक ''समाज के साथ समायोजन'' की क्षमता का विकास होता है। लेकिन यह तभी सम्भव है जब बालक शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हो । अर्थात् शारीरिक और मानसिक रूप से उसमें शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता हो क्योंकि एक स्वस्थ व्यक्तिही अपने जीवन, समाज और राष्ट्र के प्रति पूर्ण योगदान कर सकता है। भारत में वर्तमान

शिक्षा व्यवस्था अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। अनुशासन हीनता और शिक्षको का उत्तरदायित्व कम ही हो रहा है। एक वास्तविक आदर्श शिक्षक वही होता है जो एक शिक्षक विद्यार्थी की आवश्यकता, क्षमता रूचि, योग्यता, विशेषताः आदि को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान करता है। परिवार छात्रों की प्रथम पाठशाला है। परिवार ही वह स्थान है जहाँ वे महान गुण उत्पन्न होते हैं, जिनकी सामान्य विशेषता सहानुभूति है। घर में ही घनिष्ठ प्रेम की भावनाओं का विकास होता है। यहीं छात्र को उदार एवं अनुदार निःस्वार्थ और स्वार्थ, न्याय और अन्याय सत्य और असत्य परिश्रम और आलस्य में अन्तर मिलता है। औपचारिक साधन के रूप में परिवार छात्रों के शिक्षित करने का सदैव मुख्य साधन रहा है। घर का वातावरण माता–पिता के आपसी सम्बन्ध व छात्रों में उनके व्यवहारों का छात्रों के व्यक्तित्व व अन्य उपलब्धियों पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इस दिशा में किये गये विभिन्न शोधों से उपर्युक्त एक तथ्य के रूप से स्थापित है कि घर में अविभावक छात्रों को जिस प्रकार के अनुशासन में रखेंगे छात्रों का व्यक्तित्व उसी प्रकार के वातावरण से प्रभावित होता है। इसलिए छात्रों के व्यक्तित्व तथा शैक्षिक निष्पत्ति पर उनके वातावरण के प्रभाव को जानने के लिए छात्रों के घर के अनुशासन को जानना अतिआवश्यक ळें

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

मानव के समग्र विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा छात्र के अन्दर मनुष्यत्व का निर्माण करती है। शिक्षा केवल साक्षर करने का माध्यम नहीं है वरन वह बालक को शिक्षित करने के लिए होती है। शिक्षा बालक के अन्दर व्यक्तिगत, वैज्ञानिक, नैतिक, शैक्षिक तथा अध्यात्मिक आदि मूल्यों के विकास के लिए होनी चाहिए। प्रत्येक मनुष्य की व्यक्तिगत, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक तथा अवकाश सम्बन्धी अनेक आवश्यकताएं होती हैं। इनकी पूर्ति शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान, कला कौशल में वृद्धि व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है तथा उसे सभ्य सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बालक अपने जन्म के कुछ समय बाद ही उसके माता पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य की बात–चीत को सुनना एवं बोलना सीख लेता है। शिक्षा सतत रूप से चलने वाली एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जो बालक को आजीवन कुछ सिखाती है।

प्राचीन काल में शिक्षा का अर्थ बालक के मस्तिष्क को ज्ञान से भरना था। बालक को कुछ तथ्यों और सिद्धान्तों को कंण्ठस्थ करना पड़ता था और यही उसके शिक्षा की इतिश्री मान ली जाती थी। शिक्षा का उद्देश्य ऐच्छिक जीवन की उन्नति करना ही नहीं था, बल्कि परलोक सुधारना और मुक्ति प्राप्त करना था। शिक्षा देने में बालक की आयु, रूचि, योग्यता और रूझान को किचिंत भी महत्व नहीं दिया जाता था। शिक्षक का कर्तव्य बालक में सूचना–भर देना था। शिक्षा बाल–केन्द्रित न होकर ज्ञान–केन्द्रित थी। वही शिक्षा बालक को दी जाती थी, किन्तु आजकल शिक्षा की प्राचीन धारणा बदल गई है। आज हम शिक्षा शब्द का प्रयोग नये अर्थ में करते हैं जो पुराने से सर्वथा भिन्न और वैज्ञानिक है। अतः हमें शिक्षा के नये अर्थ को भी भली–भाँति समझ लेना चाहिए अन्यथा शिक्षा क्या है, इस कथन का उत्तर अधूरा ही रहेगा।

आधुनिक काल में शिक्षा का तात्पर्य उपदेश देना नहीं माना जाता और न काल्पनिक सुदूर भविष्य को ध्यान में रखकर ही बालक को शिक्षा दी जाती है। आज शिक्षा का उद्देश्य बालक के वर्तमान का निर्माण करना है, बालक के जीवन की प्रत्येक अवस्था में उसके अभिवर्द्धन और विकास में सहयोग करना है। शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया की एक स्थिति है, जिसका उद्देश्य समाज के सदस्यों को आजीवन अपने वर्ग में रहने योग्य बनाना है। आज शिक्षा का अर्थ कठिन परिश्रम करने के रूप में नहीं दिया जाता, शिक्षा ग्रहण करना तो एक आनन्दपूर्ण प्रक्रिया समझी जाती है। बालक नई वस्तुओं को सीखने में आनन्द का अनुभव करता है। शिक्षा प्राप्त करने में आनन्द की इस अभिवृत्ति का होना परम आवश्यक है। अध्यापक तो एक सहायक और पथ–प्रदर्शक के रूप में होता है वह नियम बनाने वाली मशीन नहीं होता। अध्यापक का व्यवहार बालकों के प्रति रूष्ट न होकर मित्र की तरह मृदुल और सहानुभूतिपूर्ण होता है। अध्यापक का कर्तव्य बालकों के सामने ऐसी समस्याओं को प्रस्तुत करता है। जिनके हल करने में बालक सक्रिय बना रहता है और आनन्द प्राप्त करता है। शिक्षा बालक को नये–नये अनुभवों से अवगत कराती है तथा वातावरण से सामजस्य स्थापित करने में सहायता देती है। शिक्षा प्राप्त करके ही मानव श्रेष्ठ बन सकता है। हमारे देश में ही प्राचीन काल से ही शिक्षा प्राप्त करने की परम्परा रही है। भारतीय दर्शनों में ज्ञान शब्द वही अर्थ रखता है जो कि व्यापक अर्थों में शिक्षा का होता है। ज्ञान तत्वों के मूल्यों को समझने में समर्थ बनाता है। भारतीय दर्शनों में केवल सूचना अथवा तत्वों के लिए ज्ञान शब्द का प्रयोग नहीं होता। अमर

कोश में ज्ञान तथा विज्ञान शब्दों का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहा है कि ज्ञान का विषय मुक्ति है जबकि विज्ञान का शिल्प और विविध शास्त्र। दूसरे शब्दों में ज्ञान वह है जो मनुष्य को अन्नत करता है।[1]

शिक्षा व्यक्तित्व का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक, नैतिक, अध्यात्मिक एवं संवेगात्मक विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए योग्यता धारण करता है।, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल जाता है, उसी प्रकार पशु समान मानव भी शिक्षा के प्रकाश से अपने भविष्य को उज्जवल तथा प्रकाशमय बनाता है। जिसके पश्चात् उसकी कीर्ति दूर–दूर तक फैली रहती है। शिक्षा एक ओर व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है जिससे व्यक्ति की उन्नति तथा प्रगति होती है। वहीं दूसरी तरफ उसे समाज का महत्वपूर्ण नागरिक बनाकर देश प्रेम की भावना उसमें पैदा करती है। शिक्षा के द्वारा प्राचीन परम्पराओं और संस्कृतियों का हस्तानान्तरण पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में करती है। शिक्षा बालक के हृदय में देश प्रेम बलिदान व निहित स्वार्थों की त्याग की भावना को जाग्रत करती है, शिक्षा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास में अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं सार्थक भूमिका अदा करती है। निश्चय ही शिक्षा सतत् रूप से चलने वाली एक ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है जो मानव को अपनी भूमिका प्रभावी ढ़ंग से अदा करने में सक्षम बनाती है एवं राष्ट्र के विकास में सहयोग प्रदान करती है।शिक्षा का अर्थ व्यक्ति की उस पूर्णता का विराम जिसकी व्यक्ति में क्षमता है।[2]

शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक तथा छात्र दोनों के बीच परस्पर आदान–प्रदान होता है। शिक्षक अपने व्यक्तित्व तथा ज्ञान के विभिन्न अंगों के प्रभाव से छात्र के व्यवहार में परिवर्तन तथा सुधार करता है। जिससे वह सम्यक विकास की ओर अग्रसर होता है। छात्र को विद्यार्थी, शिक्षार्थी और शिष्य आदि नामों से जाना जाता है। उपरोक्त पक्षों के अतिरिक्त एक पक्ष और होता है, जिसको पाठ्यक्रम कहा जाता है। इन तीनों पक्षों में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। कोई भी शिक्षा की प्रक्रिया प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षक के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है।

शोध समस्या कथन:-मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवस्था विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं समायोजनके प्रभाव का अध्ययन

प्रयुक्त शव्दो का परिभाषीकरण:-

मुरादाबाद जनपद:- मुरादाबाद जनपद में सन् 1991 में 40.35 प्रतिशत पुरूष तथा 19.03 प्रतिशत महिलाऐं साक्षर थीं और 30.77 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर थे। सन् 2011 में बढ़कर पुरूष साक्षरता का प्रति 56.66 एवं महिला साक्षरता का प्रतिशत 33.32 हो गया और 45.74 प्रतिशत व्यक्ति साक्षर थे। 2011 की जनगणना के अनुसार कुल लिंगानुपात 58.67 था।माध्यमिक विद्यालय– माध्यमिक विद्यालयों से आश्य उन विद्यालयों से है जिनमें कक्षा 6 से लेकर 12वीं तक की शिक्षा दी जाती है। यह उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होते हैं तथा इस श्रेणी में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल भी शामिल होते हैं। जो सी0बी0एस0ई0 द्वारा मान्यता प्राप्त व संचालित होते हैं।

किशोरवय विद्यार्थी:- अर्थात किशोरावस्था को जानना भी आवश्यक हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति जब अपने विकसित होते हुए जीवन की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है तो आगे एक ऐसी अवस्था आती है जो बचपन औरप्रौढ़ता के बीच झूमता है और यह दौर होता है किशोरावस्था। किशोरावस्था का अर्थ ही परिपक्वता की ओर अग्रसर होना है। यह मानव के विकास में एक ऐसा दौर होता है जिसमे व्यक्ति की वृद्धि की दर बहुत तेज होती है। जीवन के इस नाजुक दौर में इसमें अपने आप को जानना और समझना होता है और जीवन का नियोजन करना होता है।

स्वास्थ्य:-स्वास्थ्य वह स्वस्थ दशा है जिससे शरीर और मस्तिष्क के समस्त कार्य सामान्य रूप से सक्रियतापूर्वक सम्पन्न होते हैं। कहावत है कि पहला सुख निरोगी काया अर्थात मानव जीवन के लिए स्वास्थ्य अतिआवश्यक है। यह व्यक्ति की क्रियाशीलता, तन, मन से किसी कार्य के प्रति लगन से।

समायोजन:- गेट्स व अन्य के अनुसार समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने व्यवहार द्वारा वातावरण को प्रभावित करता है। किशोरावस्था को मनोवैज्ञानिको सने तूफान व उतार–चढ़ाव की आयु बताया है। इस अवस्था मे बालक को परिवार तथा समाज में समायोजन करने मे सबसे अधिक कठिनाई होती है। उचित

मार्गदर्शन के अभाव में वह अपने समाज में समायोजन नहीं कर पाता है जो उसके सर्वागीण विकास मे रूकावट उत्पन्न करते है।

रूचि:- रूचि शब्द का तात्पर्य है– यह आवश्यक होती है तथा यह सम्बन्धित होती है"अतएव एक वस्तु जो हमारे अन्दर रूचि पैदा करती है वह वस्तु है जो हमारे से सम्बन्धित है या हमारे लिये आवश्यक है। परन्तु हम एक व्यक्ति के अनुभव का उल्लेख करने के लिये जब कार्य मे संलग्न है तब रूचि शब्द का प्रयोग कर सकते है। यह किसी सक्रिय या सक्रियता की सहकारिता के परिणाम के कारण हो सकती है । हम कह सकते है कि हम उन्हीं विषयों की ओर उन्मुख होते हैं जो हमारेअन्दर रूचि उत्पन्न करतें है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :- प्रत्येक व्यक्ति जिस किसी कार्य को करता है उसका कुछ न कुछ उद्देश्य निहित होता है। उद्देश्य के बिना वह कुछ भी कार्य नहीं करता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य निम्नंलिखित हैं।

1- मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय शहरी विद्यार्थियों की स्वास्थ्य एवं समायोजन सहसम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनायें :- प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोध अध्ययन को संपादित करने हेतु निम्न निम्नांकित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया।

1. मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय शहरी विद्यार्थियों की स्वास्थ्य एवं समायोजन सहसम्बन्ध पाया गया है।

शोध अध्ययन विधि :- प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए "वर्णनात्मक अनुसंधान" का एक प्रकार आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करना उचित लगेगा इसलिए शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग प्रस्तुत शोध अध्ययन में किया गया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 द्वारा मान्यता प्राप्त तथा सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों का अध्ययन किया गया। इस प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद मुरादावाद के सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :- प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता ने उद्देश्यों के अनुरूप उपकरणों की खोज की, अतः शोधकर्त्ता ने शोध पर्यवेक्षक एवं शोध क्षेत्र के अन्य अनुभवी विद्वानों से सम्पर्क किया तथा उनके परामर्श से मानकिकृत उपकरण का प्रयोग किया है।

अध्ययन का परिसीमांकन :-प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल जनपद मुरादावाद तक ही सीमित है। शोध अध्ययन में केवल माध्यामिक स्तर पर अध्ययनरत् केवल कक्षा 9 के ही विधार्थियों का ही चयन किया गया है

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या:- प्रस्तुत शोध अध्ययन कि निम्नलिखित सीमायें निर्धारित हैं।

परिकल्पना परिक्षण-1मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय शहरी विद्यार्थियों की स्वास्थ्य एवं समायोजन सहसम्बन्धपर सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या -1.0

शहरी विद्यार्थी	संख्या	सहसम्बन्ध	सहसम्बन्ध सार्थक स्तर
स्वास्थ्य	304	0.099	धनात्मक
समायोजन			

व्याख्या –तालिका संख्या 1.0मेंमुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय छात्रों की स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की स्थितिको दर्शाया गया है। मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय छात्रों की स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.099 प्राप्त हुआ है। दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है।

ग्राफ संख्या –1.0

मुरादाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरवय छात्रों की स्वास्थ्य एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की ग्राफीय स्थिति

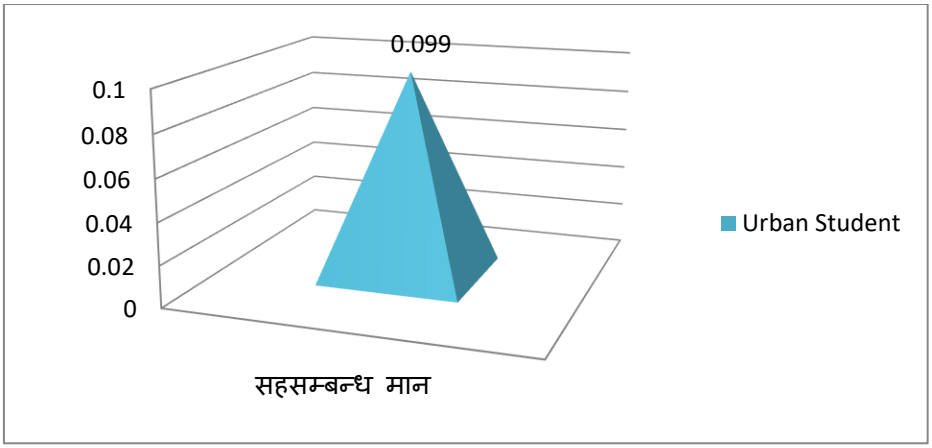

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **Abdelrazek, O. H. G. (2016).** Level of aspiration, critical thinking and future anxiety as predictors for the motivation to learn among a sample of students of Najran university. International Journal of Education and Research, 4(2), 61-70.
2. **Alexander, S. C. P. (2011).** Family environment externalizing and internalizing behaviors among adolescents in St. Lucia. Loma Linda University. Electronic Theses & Dissertations, Paper 18.
3. **Borah, S. (2013).** Family environment and Academic achievement of adolescent students of Jorhat District, Assam. Indian Journal of Education, Research, Experimentation and Innovation, 3(3).
4. **Bhandari, S. (2014).** A study of the level of aspirations among the adolescents. GHG Journal of Sixth Thought, 1(1), 40-42.
5. **Dhingra, R. (2001).** A study of certain selected variables (Family Environment and social adjustment) Related to hearing impaired children. Journal of human ecology, 22(1), 83-87.
6. **Prasad, M. (1994).** A study of social alienation among secondary school students. Ph.d. in Education, University of Lucknow, Lucknow (U.P.)
7. **Parveen, S. (2013).** Self-identity, value preferences, level of aspiration and personality characteristics among professional and non-professional students. Ph. D. Thesis, department of psychology. Aligarh Muslim University.
8. **Pathak, S. N. (2014).** A study of level of aspiration and achievement motivation of college students. Shrinkhala, 2(4), 13-15.
9. **Pfingst, P. (2015).** Girls career aspiration: impact of parants economic and educational status on educational and career pathways. Master of Education (Research) Dissertation. Faculty of Education. Queensland University of Technology.
10. **Ravneet (2005).** Aggression and adjustment among adolescents belonging to one child and many children families in relation to socio–economic statas and home environment. Ph.D. in Education, Kurukshetra University, Kurukshetra.